ॐ

-: विशेष सूचना : -

इन सब धार्मिक व आध्यात्मिक विचारों का किसी व्यक्ति विशेष , धर्म , जाति , समाज , संस्था , पार्टी व किसी भी संगठन या दल से कोई संबंध नहीं है । यदि कहीं कुछ मिलता है तो स्वाभाविक है ये सब सिर्फ अपने विचार व भावनाओं पर ही आधारित है इसके आलावा और कुछ नहीं है तथा सब अधिकार स्वरक्षित हैं।

'' दास विष्णु ''

• विष्णु शरण गुप्ता –

कृपया नोट करें : -

ये सब पवित्र धार्मिक व आध्यात्मिक सामग्री ईश्वर की वाणी ही है । कृपया इन सब को नष्ट न करें । इन सबको किसी अच्छी धार्मिक संस्था व ट्रस्ट को देने का कष्ट करें ताकि इन सबका सदुपयोग हो सके । '' धन्यवाद ''

''दास विष्णु '' • विष्णु शरण गुप्ता – ॐ नम शिवाय :

ॐ

ॐ श्री गणेशाय नमः

धार्मिक व आध्यात्मिक विचार

1। प/ाणियों पौधों और सब वस्तुओं में वही परम ब/ह्म परमात्मा व्याप्त है उसके बिना किसी का भी अस्तित्व नहीं है ।

2। जल थल आकाश व सम्पूर्ण ब्रह्मांड सब उसी का £प है और वो ही इसका संचालक है ।

3। जब वासना बिल्कुल समाप्त हो जाती है और व्यक्ति स्वार्थ रहित दया व प्रेममय होकर हृदय से उसकी आराधना करता है तो उसे हर प्राणी पौधों व वस्तुओं में उसी का दर्शन होता है हर तरफ उसी का आभास होता है ।

4। अगर हृदय में एकाग्रता व अनासक्ति हो और सच्चे मन से उसमें भाव भक्ति हो तो वह व्यक्ति भगवान को प्राप्त कर सकता है ।

5। ये नीला आकाश , सफेद शांत पहाडियां , ऊंचे ऊंचे पेड व समुद्र सब में तू ही है सर्व दा तेरा ही रहेगा , मनुष्य और सब प्राणी तो विश्व में जब तक दाना पानी है रह रहे हैं किरायेदार की तरह , जब हिसाब चुकता हो जायेगा तो जाना होगा अनजान की तरह ।

6। जिसमें संवेदनशीलता नहीं है वह खुद तो सुखी व निश्चिंत रहता है पर जो उसके विशेष व निजी व्यक्ति हैं उनको उससे सब क्षेत्र में बहुत प्रभावित होना पडता है ।

7। जब तक प्राणियों में प्रकृति की देन " मातृ प्रेम " है तब तक सृष्टि का सृजन होता रहेगा । जब "मातृ प्रेम" समाप्त हो जायेगा तब सृष्टि का भी अंत हो जायेगा ।

8। जो माता पिता व बडों का हृदय से आदर व सेवा करता है , व मान देता है वह जीवन में हमेशा उनके हार्दिक आशीर्वाद व शुभकामनाओं से हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेगा व प्रसन्नचित्त रहेगा । उसकी भगवान स्वयं रक्षा व सहायता करते हैं ऐसे कई उदाहरण हैं ।

9। जो अहंकार रहित हैं सरल चित्त हैं जिनके हृदय में दया का अपार समुद्र है वह भगवान के बहुत ही निकट हैं इसके विपरीत अहंकारी निर्दयी व आडंबर वालों से भगवान कोसों दूर रहते हैं ।

10। जानवरों में मनुष्य जैसी समझ नहीं है परन्तु फिर भी भगवान ने उन्हें तीन चीजों का ज्ञान दिया है । पहली सुरक्षा दूसरी भोजन जुटाना , तीसरी बात अपने रहने के लिये सुरक्षित स्थान का प्रबन्ध करना ।

11। आजकल संचार माध्यमों में टीवी पत्र पत्रिका और फिल्म इत्यादि में विदेशी संस्कृति व नंगापन का बोलबाला है ऐसी स्थिति में आने वाली पीढियों व भारतीय संस्कृति का क्या हाल होगा यह एक विचारणीय प्रश्न है जिसकी किसी को भी चिन्ता नहीं ।

12। दीन दुखियों की सेवा सच्चे हृदय से व निस्वार्थ भाव से कर भगवान को पाया जा सकता है । सेवा से जो संतोष उनके हृदय को मिलता है उससे प्राप्त आशीर्वाद उन्हें भगवान तक पहुंचाने में सहायक होता है ।

13। मनुष्य आपदाओं और कष्टों के लिये अधिकतर प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से स्वयं ही उत्तरदायी है ।स्वयं ही उनको बुलावा देता है।

14। मनुष्य कितना भी ज्ञानी क्यों न हो उसे जनसाधारण से भी बहुत कुछ सीखने को मिल सकता है ।

15। जो मनुष्य अपने आपको बहुत बडा ज्ञानी व समझदार समझता है उससे बडा मूर्ख कोई नहीं है. ।

16। हम चींटी जैसी छोटी वस्तु से भी बहुत कुछ शिक्षा ले सकते हैं ।

17। धर्म व जाति मनुष्य की देन है हम हिन्दू हैं भगवान को मानते हैं जो मुसलमान हैं वह अल्लाह को मानते हैं जो ईसाई हैं वह ' गौड ' को मानते हैं पर वास्तव में सर्वशक्तिमान एक ही है , चाहे भगवान कहो , अल्लाह कहो या ' गौड ' कहो और सबकी शिक्षा भी एक ही है '' सच्चाई व प्रेम '' ।

18। मनुष्य की अदालत में बडा और प्रभावी अपराधी आदमी जेल में भी जेल की प्रथम श्रेणी में रहता है और छोटा अपराधी आदमी यातनाओं को सहते हुए तीसरी श्रेणी में रहता है

पर भगवान की अदालत में कोई बडा छोटा नहीं है अपराध करने पर सब को सजा समान ही मिलती है बडा हो या छोटा ।

19। सूर्य के अस्तित्व से ही हमारा व सब प्राणियों का जीवन है जिस दिन सूर्य का अस्तित्व समाप्त हो जायेगा उस दिन पृथ्वी का अस्तित्व भी समाप्त हो जायेगा ।

20। पृथ्वी की गतिशीलता से सब काम सुचारु रूप से चल रहा है । रात ,दिन , महीने , वर्ष तथा सर्दी ,गर्मी , वर्षा ऋतुएं सभी नियम में बंधे हैं व कार्य रत हैं । इस प्रकिया में एक एक पल तक का हिसाब है और सदियों से कोई इसमें अन्तर नहीं आया है ।

21। मनुष्य बुरी बातों को बहुत जल्दी ग्रहण कर लेता है अच्छी बातों को सतत प्रयत्न करने पर भी ग्रहण नहीं कर पाता है ।

22। सत्संग मनुष्य के लिये बहुत आवश्यक है , जिस तरह जीवन के लिये भोजन व पानी आवश्यक है , इसी तरह आध्यात्मिक विकास के लिये और भगवान को पाने के लिये सत्संग आवश्यक है ।

23। सत्संग से लाभ तभी होगा जब संसार की चिन्ताओं को त्याग कर हम मानसिक रूप से सजग रहकर भगवान को पाने का प्रयत्न करेंगे अन्यथा समय ही नष्ट करते रहेंगे ।

24। सब मनुष्यों में , प्राणियों में ईश्वर का ही वास है उन्हीं की कृपा से सब कार्यरत हैं । ईश्वर के अस्तित्व के बिना सब टूटे खिलौनों की तरह बिखर जायेंगे ।

25। तू सच्चा है तेरा नाम सच्चा है अन्य सब मिथ्या है क्षण भर का स्वप्न मात्र है ।

26। मनुष्य जीवन जाग्रत अवस्था का लम्बा स्वप्न है,और दूसरा सुषुप्ति अवस्था का छोटा,पर दोनों स्वप्न हैं।

27। जो व्यक्ति जानता है कि ईश्वर सर्वत्र व्यापक है वह सब पापों व बुराईयों से बचा रहता है व उत्तरोत्तर उन्नति करता रहता है ।

28। मनुष्य जीवन दुर्लभ है सोच समझ कर, प्रयत्न से ईश्वर को पा ले , अन्यथा चौरासी लाख योनियों में या इससे भी अधिक योनियों में तुझे भटकना पडेगा ।

29। प्रेम , भाव , भक्ति व सदाचार से आत्म शक्ति बढती है आत्म विकास होता है और इसी से ईश्वर का मार्ग प्रशस्त होता है ।

30। यह प्रकृति का नियम है कि जो जैसा करता है उसको वैसा ही फल मिलता है , जो अच्छे कर्म करेगा उसे अच्छा ही फल मिलेगा , बुरा करने वाले को बुरा ही फल मिलेगा । हम फूल बोयेंगे तो फूल ही मिलेंगे , और कांटे बोयेंगे तो कांटे ही मिलेंगे ।

31। गलत तरीके से अर्जित की हुई धन व संपत्ति जीवन पर्यन्त दुखदायी व विनाशकारी होती है इसके विपरीत ईमानदारी से कमाई हुई संपत्ति हमेशा सुख समृद्धि यश व सद् बुद्धि प्रदान करती है ।

32। अच्छे कर्म करने की प्रबल इच्छा आत्मबल की द्योतक है ।

33। मनुष्य बडा होता है तो समझता है कि मेरी आयु बढ रही है परन्तु कुल आयु में से दिन कम होते जाते हैं।

34। मनुष्य चाहे जितना प्रयत्न करे पर मिलता उतना ही है जितना उसके भाग्य में होता है ।

35। सदाचार से जीवन महकता है ।

36। काम क्रोध व लोभ जीवन के महान शत्रु हैं इससे अपना जीवन तो निरर्थक होता ही है दूसरों का जीवन भी अशांत व क्लेश पूर्ण हो जाता है ।

37। रे मन क्यों भटकता है विश्व माया जाल में ! जब स्वांस तेरा साथ छोड देगा , ये कपट की कमाई यहीं रह जायेगी , तेरे साथ जायेगा बस तेरा अच्छाईयों का भंडार , तेरा उपहार !

38। आजकल व्यक्ति का स्वार्थ समाज में अशान्ति व क्लेश का कारण है । अपने कर्तव्यों को भूल कर अधिकारों पर अधिक ध्यान देता है , अनधिकार चेष्टाओं में लगा रहता है ।

39। जो बुराइयों से दूर रहता है , सद् गुणों को धारण करता है , भेदभाव रहित सभी आत्माओं को सम भाव से देखता है , और अनन्य भाव से परमात्मा को भजता है वह सच्चा साधु है , ईश्वर को अवश्य पाता है ।

40। " मौन आत्म विकास का द्योतक , और झूठ का क्रूरतम रूप है "।

41। सत्य ही जीवन व ईश्वर है ।

42। चित्त की शुद्धता ईश्वर को पाने के लिये अत्यावश्यक है , काम , कोथ , लोभ व मोह रूपी दलदल से उभर कर ही चित्त की शुद्धता व उससे ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है ।

43। संशयात्मक बुद्धि मनुष्य को अधोगति की ओर ले जाती है , उसका विनाश ही करती है , इहलोक व परलोक में वह सदा दुखी ही रहता है ।

44। हे प्रभु ! यह संसार विचित्र है , पैसे के लिये सुकोमल और देवी जैसी सुन्दर नारियां सब तरह के अंग प्रदर्शन करती हैं और सब तरह के कुकृत्य कर लेती हैं तू कब उनको सद्बुद्धि देगा !

45। अंत:करण की शुद्धता के लिये अहंकार व अभिमान का त्याग जरूरी है , गर्व मनुष्य को पतन की ओर ले जाता है इसके त्याग से ही शुद्धता आयेगी तभी मुनुष्य ईश्वर को पा सकेगा ।

46। बहुत ज्यादा परिश्रम स्वयं के लिये दर्द बन जाता है ।

47। कठिन परिश्रम के बिना सफलता नहीं मिलती ।

48। प्रत्यक्ष आंखों से भगवान को कोई नहीं देख सकता । जब साधना करते करते आंखें कान व शरीर प्रेममय हो जाता है , व्यक्ति की अन्तरआत्मा प्रेममय हो जाती है तब वह उन्हीं आंखों से उन्हें देख सकता है और कानों से उनकी वाणी सुन सकता है ।

49। धर्म के अनुसार स्त्रियां दो प्रकार की होती हैं : - विद्यारूपिणी व अविद्यारूपिणी । प्रथम भगवान की ओर ले जाती है दूसरी भगवान को भुलाकर संसार में डुबा देती है ।

50। सद्विचार से जीवन सुगन्धित होता है ।

51। जल , थल , वायु , आकाश व समस्त प्राणी पौधों में ईश्वर का वास है , पर प्रत्यक्ष वही देख सकता है जो प्रेममय है , संसारी व मायामय व्यक्ति उन्हें नहीं देख सकते ।

52। ईश्वर का गुणगान अति कल्याणकारी है फल अवश्यम्भावी है भले ही विलम्ब से हो ।

53। अरे मन ! मन्दिर , मस्जिद , गिरिजाघर और सब तीर्थों में उसको पाने के लिये कहां भटकता फिरता है तू , सच्चे विश्वास से अपने मन मन्दिर में झांक कर तो देख , वह तो तेरे अन्दर ही बसा हुआ है ।

54। जब तक ज्ञान तथा ईश्वर लाभ नहीं होता तब तक बार बार जन्म ग्रहण करना पडता है , ईश्वर लाभ हो जाने पर फिर संसार में व पृथ्वी लोक में नहीं आना पडता , वह ईश्वर में विलीन हो जाता है ।

55। '' मैं और मेरा ही '' हमारे मन को उन्नति करने से रोकता है यह अहंकार ही ईश्वर प्राप्ति में बाधक है ।

56। अपने पाप और पुण्य कर्मों को भोगने के लिये ही भगवान शरीर धारण कराता है । परन्तु जब जीव ईश्वर लाभ कर लेता है ज्ञान प्राप्त कर लेता है तो जन्म मरण के बन्धन से मुक्त हो जाता है मोक्ष को प्राप्त होता है ।

57। पुण्य और सत्कर्म को भूल जाना चाहिये , इसका अहंकार अच्छा नहीं , भगवान दूर हो जायेंगे , पापों को याद रखेंगे , तो चित्त शुद्ध न होगा ।

58। शिक्षा वह सुन्दरता है जिससे हमारा व्यक्तित्व निखरता है व शालीनता आती है और अच्छे जीवन को आधार मिलता है ।

59। जिस तरह एक पौधे के लिये अच्छी खाद हवा पानी और रोशनी की आवश्यकता है , उसी तरह एक बच्चे की परवरिश के लिये माता पिता की , सब तरह से अच्छी देखभाल की आवश्यकता है ।

60। सब मनुष्यों व प्राणियों के प्रति कल्याण की भावना ही सच्चा धर्म है , और हो सके तो उनके दुखों का निवारण करना चाहिये ताकि आत्म शांति मिले ।

61। हमारे सद्विचार , सदाचार , सद्व्यवहार व सद्भावनाओं से सारा समाज महकता है ।

62। संसार की सब वस्तुएं व प्राणी नाशवान हैं , ब्रह्म अविनाशी , सत्य स्वरूप , आनन्द स्वरूप व ज्ञानस्वरूप है इसलिये सुख शांति चाहने वालों को इस लोक में या परलोक में उसको पाने के लिये हमेशा भजन ,पूजा व ध्यान करना चाहिये ।

63। कठपुतलियों का खेल देख कर ऐसा लगता है कि संसार भी एक रंगमंच है जिसमें सब प्राणी कठपुतलियों की तरह हैं और सबकी डोर ऊपर वाले के हाथ में है जिस तरह चाहता है सब को नचाता है ।

64। हम समय के रहते काम ठीक समय से कर सकते हैं पर समय को या घडी को पीछे नहीं कर सकते । यह मनुष्य के हाथ में नहीं है ।

65। धन , पुत्र व सांसारिक सुख साधनों की प्राप्ति को मनुष्य सच्ची शांति व सुख मानता है पर वह तो त्याग आत्म समर्पण और सच्चे मन से उसकी आराधना से ही मिलता है ।

66। सुख दुख तो अपने कर्मों का विधान होता है उनको उसका प्रसाद समझ कर जो उसे सहर्ष स्वीकार करता है वह तप रूप हो भगवान को पाने का मार्ग प्रशस्त करता है ।

67। ईश्वर प्राप्ति के बाद मनुष्य का स्वभाव पांच साल के बच्चे जैसा हो जाता है जो सतोगुण , रजोगुण व तमोगुण से भी परे होता है ।

68। भोग और वासनाओं के रहते कर्मो का त्याग नहीं होता , उससे केवल उसे दुख ही दुख मिलता है तभी उसमें वैराग्य का भाव जगता है तभी मनुष्य सब कुछ छोडकर ईश्वर को पाने का प्रयत्न करता है ।

69। दया और माया एक दूसरे के विपरीत हैं दया से निस्वार्थ भाव से सबकी सेवा होती है चित्त शुद्ध होता है मनुष्य भगवान को प्राप्त करता है । माया से आत्मीय जन जैसे माता पिता

भाई बहिन आदि से प्रेम होता है उन्हीं की सेवा कराती है संसार में बांधती है अज्ञानी बनाती है उससे मुक्ति नहीं मिलती । दया संसार से मुक्त कराती है और माया संसार में बांधती है ।

70। परोपकारी होना ही मनुष्यता की पहचान है स्वार्थ अमानुषिकता है ।

71। ईश्वर की आराधना समभाव पूर्ण और समदृष्टि रूपी पुष्पों से करनी चाहिये ।

72। संस्कारों की मनुष्य व समाज पर अमिट छाप होती है । इसका जीता जागता उदाहरण है भारतीय संस्कृति व विदेशी संस्कृति । दोनों में कितना अन्तर है !

73। ज्ञानियों का मानना है कि ईश्वर किसी को दंड नहीं देता है मनुष्य को अपने पाप , मद , और अहंकार ही मारते हैं और तरह तरह की यातनायें देते हैं । इसलिये ज्ञानी लोग काम, कोध, लोभ और अहंकार को मानव का शत्रु मानते हैं ।

74। मनुष्य जब सत्य की ओर बढता है तो उसकी दृष्टि ही बदल जाती है । वह बाहरी सौन्दर्य को छोडकर आन्तरिक सौन्दर्य में डूब जाता है । उसे सत्यं शिवं सुन्दरं का ज्ञान हो जाता है । वही सच्चा ज्ञान है ।

75। विश्वास ही मनुष्य की सफलताओं का प्रतीक है ।

76। राष्ट्र के सबल व एकीकरण के लिये सर्वमान्य व सरल एक ऐसी भाषा की आवश्यकता है जो पूरे राष्ट्र के लिये उपयोगी हो । हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जो पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में पिरो सकती है ।

77। पवित्रता व परोपकार ही उपासना का सार है । जो पीडितों , निर्बलों और गरीबों में भगवान को देखता है वही सच्चा उपासक है जो मूर्ति में ही भगवान को देखता है वह उसकी उपासना का आरंभमात्र है।

78। व्यक्तियों की सच्ची जीवन गाथा दर्शाने वाला साहित्य ही वास्तविक इतिहास है।

79। ईश्वर चिंतन का बोध रहे तो फिर वह जीवन मुक्त ही है परन्तु सब में यह विश्वास नहीं होता । केवल मुंह से कहते हैं "ईश्वर हैं उन्हीं की इच्छा से सब हो रहा है " इसको सच्चे भक्त ही जानते हैं विषयासक्त लोग सुन भर लेते हैं विश्वास नहीं रखते ।

80। सबसे बडी है पृथ्वी ,उससे बडा है समुद्र व उससे बडा है आकाश , परन्तु भगवान ने एक पैर से स्वर्ग पृथ्वी और पाताल त्रिभुवन पर अधिकार कर लिया था उन विष्णु का पद साधु के हृदय में है इसलिये साधु का हृदय सबसे विशाल और सबसे बडा है ।

81। इस शरीर की इन्द्रियां कितने भी अच्छे सुख भोग लें परन्तु उनकी तृप्ति का अन्त नहीं जब तक शरीर है इनकी तृप्ति का अन्त नहीं है ।

82। अगर मन शुद्ध है और ईश्वर के ध्यान में खोया रहता है तो उसे अच्छे बुरे का ज्ञान नहीं होता ।अच्छा बुरा सब कुछ करते हुये भी निर्लिप्त रहने वाला दोष व पाप का भागी नहीं होता ।

83। संसार में व्यक्ति सांसारिक कार्यों में व्यस्त रहता है जैसे जैसे ईश्वर की ओर बढता है कर्मो का आडंबर घटता जाता है पूजा, जप, कीर्तन कम होते जाते हैं मन भगवत ध्यान में खोने लग जाता है ।

84। आजकल अधर्मी और दुष्ट लोगों की संख्या ज्यादा होने के कारण अच्छे लोगों को तरह तरह की यातनायें व कष्ट भोगने पड रहे हैं ।

85। दु:ख सुख का पर्याय है और सुख दु:ख का पर्याय है ।

86। मूर्ख लोग अधर्म भी धर्म कहकर करते हैं ।

87। निस्वार्थ भाव से उसकी आराधना व आत्म चिंतन ही सच्चा सुख है और स्वार्थ पूर्ण विश्व चिंतन ही सब दु:खों का कारण है ।

88। अहंकार रहित , समत्व भाव वाला , दीनों का सेवक वास्तव में ही श्रेष्ठ पुरूष व सच्चा संत है ।

89। परोपकार ही मनुष्यता की पहली पहचान है ।

90। जिसका हृदय मनुष्य व प्राणियों के दुखों को देखकर द्रवित नहीं होता उसका हृदय पत्थर के समान है।

91। राजनीति सत्ता के लालच में आज मनुष्य को भ्रष्ट, दुराचारी, चरित्रहीन व अन्दर से बिल्कुल खोखला बना रही है उसके पास परम पिता परमात्मा को देने के लिये पापों के अलावा कुछ है ही नहीं ।

92। सच्चे मन से सब इच्छाओं का त्याग कर ही सच्चे सुख और शान्ति का मार्ग मिल सकता है।

93। मनुष्य खाली हाथ आया और खाली हाथ जायेगा । जीवन पर्यन्त जो पाप व पुण्य कर्म करता है उसकी वही धरोहर है उसी से उसकी मुक्ति या पुनर्जन्म निश्चित होता है ।

94। होली हिन्दुओं का पवित्र त्यौहार है भक्त प्रहलाद के समय से चला आ रहा है सभी प्रेम से सब मतभेद मिटा कर रंग, गुलाल, चन्दन लगाकर गले मिलते हैं मिष्ठान्न बांटते हैं । रंग व प्रेम का त्यौहार है ।

95। यथार्थ का अर्थ है अस्तित्व और विकास । ये दोनों ही इसके आधार स्तम्भ हैं ।

96। मनुष्य तो साक्षात परब्रह्म परमेश्वर का ही अंश व स्वरूप है पर संसार में आकर मायारूपी जाल में फंसकर स्वयं को भूल जाता है जानवर से भी नीचा गिर जाता है, अपना अस्तित्व भूल जाता है ।

97। मोह, ममता, राग, द्वेष आदि विषयों से बचना चाहिये । मायारूपी जगत से अपना मन हटा कर भगवान् में लगाना चाहिये । प्रत्येक प्राणी में भगवान हैं ऐसा समझकर उसकी सेवा करो व उसका दुख दूर करो , भगवान की कृपा अवश्य होगी ।

98। कर्तव्य परायणता मानसिक पौष्टिकता प्रदान करती है ।

99। आत्मा का संबंध सीधा परमात्मा से है और मन और बुद्धि संसार और परमात्मा के बीच की कडी है ।

100। सत्य पापों से मुक्ति दिलाता है और असत्य पापों में बांधता है ।

101। अभिमान छोडो हर एक के प्रति नम्र व दयालु दृष्टि रखो । दूसरों में दोष दृष्टि रखने से आत्म बल क्षीण होता है उनकी अच्छाइयों को ग्रहण करने से आत्म बल बढता है तथा पापों से मुक्ति मिलती है ।

102। निस्वार्थ भाव से किया हुआ गुप्त दान महायज्ञ है जो ईश्वर को प्राप्त कराता है स्वार्थ भाव से किया दान व्यर्थ व नरकगामी होता है ।

103। प्रवचन करते समय तिलक सजावट की और भीड जुटाने की क्या आवश्यकता है स्वयं को व श्रोताओं को भगवान से मिलाना है सादगी व सच्चे मन से भगवान को याद करो वे तो सच्चे प्रेम के भूखे हैं दिखावे के नहीं । शबरी व सुदामा इसके उदाहरण हैं ।

104। जो आवश्यकता के समय सहायता करता है कसौटी पर खरा उतरता है वही सच्चा हितैषी व मित्र है ।

105। मुख व्यक्ति का दर्पण है जो भी उसके अन्दर भावनायें व विचार होंगे स्पष्ट झलक जाते हैं ।

106। सच्चा प्रेमी प्रकृति से ही त्यागी है केवल देना ही जानता है इससे उसे शान्ति मिलती है और ईश्वर प्राप्ति होती है । अहंकारी स्वार्थी होता है और लेना ही जानता है अशान्त रहता है ईश्वर भी उससे दूर रहते हैं पतन की संभावना भी निश्चित रहती है ।

107। माता पिता का कर्त्तव्य है कि बच्चों को शुरू से ही अच्छी शिक्षा व अच्छे संस्कार व धार्मिक शिक्षा प्रदान करें जिससे वे आज के दूषित वातावरण में अपने को संभालते हुये अपने भविष्य को उज्जवल बना सकें ।

108। अपनी अन्तरात्मा का निर्णय सबसे अलग होता है पवित्रता और सच्चाई पर निर्भर होता है ।

109। जहां काम वहां नहीं राम जहां राम वहां नहीं काम ।

110। जिसका कोई उपचार नहीं उसे सहर्ष स्वीकार व सहन कर लेना चाहिये ।

111। जिसने स्वयं को सब कामनाओं से मुक्त कर लिया है वह सच्चे मन से उस परम ब्रह्म परमात्मा की शरण में चला गया है वह उस शान्त समुद्र की तरह है जिसमें सहस्त्रों नदियां समा जाती हैं वह ब्रह्म ज्ञानी ईश्वर का परम प्रिय है।

112। पूर्व जन्म से अब तक कम जारी है जब तक हम सच्चे मन से सब त्याग कर उसका स्मरण नहीं करेंगे और उसकी शरण में नहीं जायेंगे मुक्ति नहीं मिलेगी और चौरासी लाख योनियों में भटकते रहेंगे ।

113। जैसा तप वैसी सिद्धि जैसे हम ईश्वर को भजेंगे वह भी उसी तरह हम को भजेगा ।

114। घूंघट से महिलायें शालीन व मर्यादित दिखती हैं उसकी भी सीमा है पर आजकल तो लगता है कि सभ्यता शालीनता नाम की कोई वस्तु ही नहीं है नंगापन गौरव समझा जाता है जो केवल कलंक मात्र है ।

115। पूज्य महापुरूषों के आदेश यदि हम आचरण में लायें तो हमें अमूल्य आध्यात्मिक निधि मिल सकती है और हमें पापों से मुक्त कर सकती है। मनमाना आचरण पथभ्रष्ट कर नरकगामी होता है ।

116। अच्छे व नेक विचार ही संस्कृति का सही स्वरूप है ।

117। मन का अपना तर्क होता है जो सबके तर्क से परे होता है ।

118। ईर्ष्या और द्वेष करने पर मनुष्य के सम्पूर्ण पुण्य कर्म नष्ट हो जाते हैं समाज में अपमान होता है ।

119। नियमित संतुलित पौष्टिक व सादा भोजन स्वास्थ्य के लिये बहुत आवश्यक है रोगों से बचाये रहता है ।

120। अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिये असहाय जानवरों की बलि चढाने वाले राक्षस हैं पापों के भागी हैं किसी भी जन्म में सुख चैन से नहीं रह सकते उनकी राक्षसी प्रवृत्ति उन्हें अनादि काल तक नरक में रखती है ।

121। अपना यह नश्वर शरीर जिस पर गर्व करते हैं यहीं रह जाता है साथ जाता है तो सच्चाई सत्कर्म और ईश्वर भक्ति इसी से ईश्वर मिलते हैं अन्यथा अधर्मी जीवन से जन्मों तक नरक का वास मिलता है ।

122। भगवान को प्राप्त करना हो तो पैसा और वासना दोनों को मन से त्यागना होगा । एकान्त में मन से ध्यान करने से उनके प्रति व्याकुलता प्रकट करने से दर्शन अवश्य होते हैं उन्हें पा सकते हैं ।

123। अपनी अकर्मण्यता व लापरवाही से असफल होने को अपना दुर्भाग्य न जानो न ही भगवान को दोष दो।

124। जब हमारे पुण्य कर्म पापों से अधिक होते हैं तो हम सत्संग भजन की ओर आकर्षित होते हैं ।

125। भगवान ने हमको संसार में संपत्ति, धन व दुनियां के सारे सुख बटोरने के लिये नहीं भेजा है उसने जन्म दिया है अपने आपको पहचानने के लिये । जिससे हम अपनी आत्म ज्योति को उस परम ब्रह्म परमात्मा की ज्योति में मिला दें और जन्म मरण के बन्धन से हमेशा के लिये मुक्त हो जायें । चौरासी लाख योनियों में न भटकते रहें ।

126। जिस व्यक्ति के लिये हीरा मोती सोना व मिट्टी एक समान है समदृष्टि समभाव रखता है वह महापुरूष है मोक्ष को पाता है उसका पुनर्जन्म नहीं होता ।

127। जन साधारण व समस्त प्राणियों में ईश्वर व्याप्त है विश्वास हो तो हम दर्शन कर सकते हैं ।

128। ब्रह्म अटल निष्क्रिय सुमेरवत् है यह संसार इसके सत्व , रज और तम इन तीन गुणों से बना है विज्ञानी देखता है जो ब्रह्म है वही भगवान है जो गुणातीत है वही ऐश्वर्यपूर्ण भगवान है । ये जीव जगत मन बुद्धि भक्ति वैराग्य और ज्ञान सब उसके ऐश्वर्य हैं ।

129। काम क्रोध लोभ मोह ईर्ष्या भ्रष्टाचार व आतंकवाद रूपी अग्नि सारे संसार में चारों ओर व्याप्त है अगर उससे छुटकारा पाना है तो उस परम ब्रह्म परमात्मा की अनन्य शरण में जाओ और सच्चे मन से उसकी आराधना करो परम शान्ति व सच्चा सुख मिलेगा ।

130। सर्वव्यापी परम ब्रह्म परमात्मा ही शक्ति व ज्ञान का स्त्रोत है ।

131। नौजवान स्वस्थ व्यक्ति मृत्यु के बाद मुट्ठी भर राख बन कर रह जाता है यदि जीवन के आरंभ में ही ऐसा विचार आ जाये तो वह सदाचारी दयालु व परोपकारी होकर नास्तिक न बन आस्तिक बन जायेगा ।

132। मान प्राप्त किया जाता है मांगने से नहीं मिलता ।

133। संसार जल है और मन दूध । यदि दूध पानी में डाल दोगे तो उसमें मिल जायेगा । यदि मन को संसार से निर्लिप्त रखोगे , निर्जन में साधना द्वारा ज्ञान भक्ति प्राप्त करके तो मक्खन की तरह संसार रूपी जल में तैरता रहेगा ।

134। एकांत में भगवान को याद करना और उनकी आराधना करना , रोकर मन की मैल धोना ईश्वर दर्शन पाना है । मन मानो मिट्टी से लिपटी सुई है और ईश्वर चुम्बक हैं रोते रोते मन की मिट्टी धुल जाती है काम क्रोध लोभ पाप व विषय आदि धुल जाते हैं और सुई को चुम्बक खींच लेता है चित्त शुद्ध होने पर ईश्वर के दर्शन व प्राप्ति होगी ।

135। अन्नदान महादान है ।इससे व्यक्ति की क्षुधा शान्त होती है आत्म संतोष मिलता है सृष्टि का सृजन व परस्पर निर्भरता कायम रहती है निस्वार्थ भाव से किया हुआ दान हमें मोक्ष का अधिकारी बनाता है ।

136। अहंकार माया है सब अपराधों का कारण है जब अहंकार नहीं रहता व्यक्ति को कोई भय नहीं रहता ।

137। तप दान तीर्थ भ्रमण भजन व धर्माचरण करने पर भी ईश्वर कृपा के बिना व्यक्ति मृत्यु पर विजय नहीं पा सकता है ।

138। कोई अमेरिकन है कोई भारतीय , कोई जर्मन पर पहले वह मनुष्य है बाद में कुछ और , दुनियाँ के सब धर्मों व खंडों का एक ही भगवान है वह है पर ब्रह्म परमात्मा , उसी की उपासना सब अलग अलग अपने अपने धर्म के अनुसार करते हैं । धर्म और खंड तो मनुष्य की देन है , मंजिल सबकी एक ही है ।

139। एक अच्छे व सच्चे कवि की लेखनी इतनी स्वतंत्र व निष्पक्ष होती है कि कवि को कोई चाहे फाँसी पर चढा दे , देश से निष्कासित कर दे व उसे कितना भी दुख उठाना पडे पर वह सच्चाई लिखने से कभी पीछे नहीं हटता , इतिहास इसका साक्षी है ।

140। ईश्वर अच्छे बुरे सब लोगों में है इसलिये सबका हृदय से स्वागत करो , बुरे की बुराई को सर्वदा त्यागो अच्छे की अच्छाई को ग्रहण करो ।

141। जो सच्चा ज्ञानी है सोचता है कि ईश्वर यंत्री है मैं यंत्र हूँ , उसी के इशारे पर सृष्टि चल रही है वही सब में विद्यमान है , जबकि अज्ञानी स्वयं को ही कर्त्ता , धनवान व शक्तिशाली समझता है और अभिमान व नाना प्रकार के मिथ्या भ्रामक विचारों में चूर रहता है ।

142। ज्ञानी लोग सब अपराधों से दूर रहते हैं हृदय से भगवत् चिन्तन करते रहते हैं , भयमुक्त व शांत चित्त रहते हैं जन्म मरण से छुटकारा पाते हैं , अज्ञानी अशान्त व भयावह जीवन व्यतीत करते हैं आशा तृष्णा व अपराधों से घिरे रहते हैं जन्म मरण से मुक्ति नहीं मिलती ।

143। स्वाभाविक गुण धर्म व अस्वाभाविकता अधर्म है ।

144 । आशा तृष्णा को त्यागो , ये उद्वेग पैदा करने वाले महाशत्रु व पापी हैं , भयंकर हैं , अधर्म से पूर्ण हैं , समस्त पापों की जड हैं । ज्ञानी लोग इसे जानते हैं पापों के भागी नहीं बनते ।

145 । संयोग वियोग , उत्थान पतन , संग्रह क्षय , जन्म मृत्यु से अज्ञानी पुरूष विचलित व दुखी होते हैं पर ज्ञानी पुरूष हर्ष व शोक के वशीभूत नहीं होते ।

146 । ज्ञानी निराकार का चिन्तन करते हैं राम व कृष्ण आदि अवतार को नहीं मानते , ब्रह्म ज्ञान होने पर उन्हें ईश्वर की सत्यता व अनित्यता का अनुभव होता है और जगत मिथ्या जान पडता है ।

147 । नित्यसिद्ध बालक संसार में नहीं बंधते , उन्हें कम उम्र में ही चैतन्य हो जाता है जैसे ध्रुव और प्रहलाद ।

148 । संसार में प्रत्येक व्यक्ति के सामने दो मार्ग हैं आध्यात्मिक और भौतिक मार्ग । आप इच्छानुसार चुन सकते हैं । आध्यात्मिकता भजन ध्यान अच्छे कर्म व विचारों की प्रेरणा देकर आत्म चिन्तन करा कर ईश्वर व मोक्ष को प्राप्त कराती है और भौतिकता संसार में बाँधती है नाना प्रकार के कुकर्म कराकर अधोगति की ओर ले जाती है तथा चौरासी योनियों में भटकाती रहती है ।

149 । संसार में कामनायें अनन्त हैं उनके पीछे लगा रहने वाला कभी सुख चैन नहीं पाता व सच्चे सुख शांति से वंचित रहता है फिर उसका उद्धार कैसे हो सकता है ।

150 । धनवान , खुशहाल , बडा परिवार होने से , उम्र ज्यादा होने से, बाल पक जाने से व्यक्ति बडा नहीं हो जाता पर जो लोग धर्म का , भगवान का प्रचार व प्रसार करते हैं वही सच्चे सेवक हैं ऋषि मुनियों ने भी भारत के उत्थान के लिये इसी मार्ग का अनुसरण किया था ।

151। जो व्यक्ति संसारिक व व्यक्तिगत परिस्थितियों से तंग आकर गेरूआ वस्त्र धारण कर लेता है पर अनुकूल आचरण नहीं कर पाता वह पाखंडी है भगवान को , संसार को व अपने को धोखा देता है और सदा के लिये अपनी स्थिति से गिर जाता है ।

152। तिलक लगाने से , गेरूआ वस्त्र धारण करने से , घंटे बजाने से महानता प्राप्त नहीं की जा सकती । हृदय से उसको याद करने से , आत्म चिन्तन व आराधना से , निस्वार्थ लोक सेवा से पुरूष महान होता है

153। " दीपक तले अंधेरा " यदि दीपक के पास एक और ज्ञान दीप प्रज्ज्वलित कर दिया जाये तो अंधेरा दूर होगा । साधु और साधक के बीच ज्ञान व सत्संग का ठीक तालमेल हो तो संसार से अज्ञान रूपी अंधकार व पाप धीरे धीरे समाप्त हो जायेंगे और निर्मल प्रेम व भक्तिमय वातावरण गोचर होगा ।

154। एक छोटी सी चिन्गारी लापरवाही से एक भीषण प्रलयंकारी अग्नि का रूप धारण कर लेती है ।

155। संसार में जितने भी कर्म हैं उनको वही परम ब्रह्म परमात्मा करता है उसी के इशारे पर सब होते हैं वही सब प्राणियों से कराता है मनुष्य यदि समझता है कि वही सब करता है तो यह उसकी भूल है अभिमान है ।

156। सत्कर्मो से शान्ति मिलती है पापों का क्षय होता है दुष्कर्मो से अशान्ति व पाप बढते हैं ।

157। संसारिक कार्यो को हमें निर्लिप्त होकर करना चाहिये और उस परम ब्रह्म परमात्मा को हमेशा याद रखना चाहिये जिसके हम अंश हैं व संतान हैं उसको पा लेने से जीवन सफल हो जायेगा अन्यथा यहीं मायाजाल में भटकते रहेंगे ।

158। ब्रह्म अथवा आत्मा के रहस्य को न जानने वाले संत नहीं हो सकते , जो सत्य स्वरूप नित्य सिद्ध वस्तु का साक्षात्कार कर चुके हैं और अखंड सत्य स्वरूप में प्रतिष्ठित हो गये हैं वे ही सच्चे संत हैं ।

159। पूजा , भजन , कीर्त्तन , आरती व हवन इतना आवश्यक नहीं जितना ईश्वर को पहचानना , जानना और उसमें खो जाना आवश्यक है ।

160। प्रकृति में परोपकार का सबसे बडा उदाहरण हमें मधुमक्खियों से मिलता है जो रात दिन मेहनत करके निस्वार्थ भाव से पुष्पों से मधु संचय करती हैं अपने लिये नहीं दूसरों के लिये , यदि यही भावना पूरे मानव समाज में हो तो आज के संसार में द्वेष भाव , मारपीट सब समाप्त हो जाये , सुख शान्ति का साम्राज्य स्थापित हो जाये , जो एक बहुत ही बडी उपलब्धि होगी ।

161। वेद शास्त्रों , ऋषि मुनियों व महापुरूषों का कहना है समत्व भाव से सबमें परम ब्रह्म परमात्मा को देखो , सब धर्मों का आदर करो , निस्वार्थ भाव से सबकी सेवा करो , सच्चाई व प्रेम का मार्ग अपनाओ , अवश्य ही संसार में सुख समृद्धि और शान्ति के दरवाजे खुल जायेंगे ।

162। संसार की सारी प्राकृतिक संपदा ईश्वर की देन है , मनुष्य के शरीर के अंग हाथ पैर मस्तिष्क के पीछे भी परब्रह्म परमात्मा की सत्ता काम कर रही है उसने जो भी विकास किया है उससे गौरवान्वित होता है यह उसकी नादानी है , जब बाढ , सूखा , भूकम्प और ज्वालामुखी फटते हैं तब उसको इसका आभास होता है ।

163। अनित्य के लिये नित्य को मत त्यागो ।

संसार के लिये प्रभु को मत त्यागो ।

झूठ के लिये सत्य को मत त्यागो ।

माया के लिये दया को मत त्यागो ।

बुराई के लिये भलाई को मत त्यागो ।

विदेश के लिये स्वदेश को मत त्यागो ।

अनाचार के लिये आचार को मत त्यागो ।

बेईमानी के लिये ईमानदारी को मत त्यागो ।

कुसंगत के लिये सत्संग को मत त्यागो ।

दुर्जन के लिये सज्जन को मत त्यागो ।

श्रद्धा के आगे अश्रद्धा को मत पनपने दो ।

विश्वास के आगे अविश्वास को बढावा मत दो ।

दुराचार के लिये सदाचार को मत छोडो ।

कामनाओं के लिये उदारता मत त्यागो ।

ममता के लिये आदर और प्यार मत त्यागो ।

अधिकार के लिये कर्त्तव्य मत त्यागो ।

164। मंदिर में जाकर श्रद्धा दीप जलाना , पूजा करना ठीक है पर इन सबसे छूटने के लिये हृदय मन मंदिर में पर ब्रह्म परमात्मा की अखंड ज्योति जलानी चाहिये और उसकी ज्योति में अपनी ज्योति मिला देनी चाहिये जिससे दुबारा जाकर मंदिर में दीप न जलाना पडे , और हमेशा के लिये मुक्ति हो जाये ।

165। यह संसार माया जाल है इसमें दुख सुख , हानि लाभ , मान अपमान , ईर्ष्या तृष्णा , लोभ मोह व अहंकार रूपी दलदल का अपार समुद्र है , इससे छुटकारा पाने का केवल एक उपाय परम पिता परमात्मा की शरण में जाना है उसको हृदय से याद करो स्वयं को मन से उस पर छोड दो वही इस दलदल से मुक्ति दिलायेगा ।

166। घटायें जल बरसा कर पृथ्वी से मिलने को आतुर रहती हैं , पुष्प अपनी गंध वायुमंडल में फैलाने के लिये व्याकुल रहते हैं उसी प्रकार एक माँ अपने बच्चे को प्यार करने के लिये सर्वदा व्याकुल रहती है यह प्राकृतिक स्नेह की पवित्र उपलब्धि है ।

167। जिसका मन भजन पूजा सत्संग में नहीं है , अशान्त व संसार में निरूद्ध है उसे अपना मन भजन पूजा में लगाना चाहिये , मन की चंचलता दूर होगी और शान्ति मिलेगी ।

168। सहनशीलता एक बडा गुण है इससे मन शुद्ध होता है आत्म चिन्तन होता है इससे प्रभु के दर्शन होते हैं कल्याण होता है संसार से छुटकारा मिलता है , आज के युग में पूज्य महात्मा गांधी जी इसके उदाहरण हैं ।

169। कहते हैं गरीब की रोटी निचोडो तो दूध की धार दिखती है , और अमीर की रोटी में ख्ून की धार दिखती है । गरीबों की रोटी ईमानदारी , प्रेम त्याग , मेहनत व पसीने की कमाई की होती है और अमीरों की रोटी बेईमानी छल कपट , गरीबों की आहों की व अनिष्ट की होती है ।एक में अमृत दूसरे में विष होता है ।

170। भगवत् कृपा वाला दुख व पापों से बचा रहता है भगवान उसकी रक्षा करते हैं सद्बुद्धि देते हैं सत्संग की प्रेरणा देते हैं और वह परमार्थ के मार्ग पर अग्रसर होकर परमात्मा को आसानी से पा लेता है ।

171। सबसे ब्डा दुख जीव को संसार में जीवन मृत्यु के बंधन का है जबतक आवागमन है बुढापा , रोग, जन्म मृत्यु व नाना प्रकार के दुख भोगने पडते हैं एकाग्रचित्त होकर हृदय से आराधना करने से जन्म मरण के बंधन से वह छूट सकता है मुक्ति पा सकता है ।

172। योगी दो प्रकार के होते हैं एक बहूदक , और दूसरे कुटीचक । बहूदक सब तीर्थों में घूमते व शान्ति के लिये प्रयत्नशील रहते हैं पर उन्हें शान्ति नहीं मिलती । कुटीचक मन को स्थिर कर लेते हैं एक जगह आसन जमाकर शान्ति व आनन्द को पा लेते हैं उन्हें तीर्थो में घूमने की आवश्यकता नहीं पडती ।

173। लोक सेवा के लिये निस्वार्थ भाव सच्चाई व ईमानदारी से जो काम किया जाता है वह भक्ति तपस्या व आराधना है , भवसागर से छुटने का व परमात्मा की प्राप्ति का एक साधन है ।

174। यदि सब धर्म जाति व सम्प्रदाय के व्यक्तियों को अपना बनाना है उनसे प्यार लेना है तो उनमें दया व प्रेम भाव से हृदय से परमेश्वर को उनके अन्दर खोजो उनका आदर करो अवश्य ही वे आपके और आप उनके हो जायेंगे । यही एक वशीकरण मंत्र है ।

175। ईश्वर को पाने के लिये बहुत सारे वेद , शास्त्रों , ग्रन्थों का अध्ययन करने की आवश्यकता समझना बडी भारी भूल है , हृदय से याद करने से , आराधना करने से , उनके लिये रोने से , व्याकुल होने से जनसाधारण व्यक्ति भी उन्हें पा सकता है वे तो प्रेम के भूखे हैं शास्त्रों के ज्ञान के नहीं । " दास विष्णु "

अन्कण ऊषा अग्रवाल द्वारा